Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue No. X, April-2013, ISSN 2230-7540

राजमाता विजया राजे सिंधिया की राजनीति में भूमिका

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue No. X, April-2013, ISSN 2230-7540

राजमाता विजया राजे सिंधिया की राजनीति में भूमिका

Dr. Ashok Arya*

Lecture, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश:- ***राजमाता विजयाराजे सिंधिया "सादगी, सरलता और संवेदनशीलता की त्रिमूर्ति थीं। राजमाता वात्सल्य की धनी थीं। वह ममतामयी थीं। विजया राजे सिंधिया, जिन्हें राजमाता कहा जाता है, ने अपना जीवन ग्वालियर और मध्य प्रदेश की प्रगति और विकास के लिए समर्पित कर दिया। यदि साहस और नेतृत्व दिखाने वाली महिलाओं की सूची लिखी जाएगी, तो मध्य प्रदेश में ग्वालियर की राजमाता मुख्य पृष्ठों में होगी। साहसी साहसी लोगों की उपस्थिति राज्य की विरासत को और अधिक शानदार बनाती है। वह कई बार चुनाव जीत चुकी थीं। राज्य में भाजपा की सरकार बनने में उनका भी योगदान है।***

मुख्य शब्द:- ***जीवन परिचय, प्रारंभिक जीवन, राजनीति में भूमिका, लोकसभा सदस्य, सत्ता परिवर्तन, विजया राजे बनाम प्रियदर्शनी, जटिल पारिवारिक संबंध, अंतिम पहलू।***

----------X----------

जीवन परिचय:

विजया राजे सिंधिया (12 अक्टूबर 1919 - 25 जनवरी 2001) का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में राणा परिवार में ठाकुर महेंद्र सिंह और चूड़ा देवेश्वरी देवी के घर हुआ था। विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेंद्र सिंह ठाकुर जालौन जिले के डिप्टी कलेक्टर थे, और श्रीमती 'विंदेश्वरी देवी' विजयाराजे सिंधिया की माँ थीं। विजयाराजे सिंधिया का पहला नाम 'रेखा दिव्येश्वरी' था। विजयाराजे सिंधिया का विवाह 21 फरवरी 1941 ई। को ग्वालियर के महाराजा जीवाजी राव सिंधिया से हुआ था। विजयाराजे सिंधिया के बेटे माधवराव सिंधिया, बेटी वसुंधरा राजे सिंधिया और यशोधरा राजे सिंधिया हैं। विजया राजे सिंधिया, जिन्हें राजमाता कहा जाता है, ने अपना जीवन ग्वालियर और मध्य प्रदेश की प्रगति और विकास के लिए समर्पित कर दिया। पिछली शताब्दी मध्य प्रदेश के इतिहास के लिए बहुत अलग नहीं थी क्योंकि इसमें एक आम आदमी को सिंहासन पर चढ़ते हुए देखा गया था, जो बाद में एक सफल राजनीतिज्ञ बन गया। यह ऐतिहासिक व्यक्तित्व ग्वालियर की रानी विजया राजे सिंधिया हैं।

उद्देश्य:

1. राजमाता विजया राजे सिंधिया की राजनीति में भूमिका का अध्ययन करना।
2. राजमाता विजया राजे सिंधिया की जनसंघ, सत्ता एवं शासन में सशक्त भूमिका का अध्ययन।

परिकल्पना:

1. राजमाता विजया राजे सिंधिया का अदभुत योगदान राजनीति में रहा।
2. राजमाता विजया राजे सिंधिया आत्मविश्वास, साहस एवं बुद्धि कौशल अदभुत रहा।

शोध विधितन्त्र

इस शोध के अध्ययन में राजनीतिक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। यह शोध राजनीतिक उपागम पर आधारित है। इस लेख में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ो को साक्षात्कार, व्यकिगत पत्र, समाचार पत्र, अभिलेख एवं विभन्न इतिहास के स्रोतों प्राप्त किया गया है।

प्रारंभिक जीवन:

लेखा देवी (राजमाता) का लालन-पालन उनकी दादी ने किया। लेखा देवी ने अपना बचपन एक आम महिला की तरह बिताया। किशोर अवस्था में, उन्होंने बनारस के वसंत कॉलेज और लखनऊ के थोबर्न कॉलेज में अध्ययन करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। उन दिनों में भी, लेखा देवी ने अपने

www.ignited.in

आत्मविश्वास और उदार व्यक्तित्व से अपने आसपास के लोगों पर एक छाप छोड़ी। उनकी इन विशेषताओं ने ग्वालियर के महाराजा जीवीजी राव सिंधिया का ध्यान आकर्षित किया। कहा जाता है कि जीवाजी राव ने पहली मुलाकात में ही लेखा देवी से शादी करने का वादा किया था। राजा और एक आम आदमी के बीच वैवाहिक संबंधों पर कई सवाल उठाए गए थे, लेकिन लेखा देवी, अब विजया राजे ने अपने समर्पण और बुद्धिमत्ता से सभी आशंकाओं का खंडन किया।

एक रानी की तरह, उनकी विशिष्ट उपलब्धियों में से एक 1956 में सिंधिया गल्स कॉलेज की स्थापना है। इस स्कूल ने लड़कियों की बेहतर शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें भारतीय मूल्यों, धर्म और संस्कृति पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। राजमाता ने एक बार कहा था-

“विज्ञान के विकास के साथ औद्योगीकरण का उदय हुआ जिसने पारिवारिक जीवन को बहुत प्रभावित किया है। आर्थिक स्थिति के कारण, भारतीय महिलाओं को भी बाहर जाना पड़ता है ताकि वे परिवार की आय का समर्थन कर सकें। मैं पुरानी कहावत को मानता हूं,” जो हाथ झूला झूलते हैं वह दुनिया पर राज करते हैं। “मैं उन हाथों को सक्षम करने के लिए एक स्कूल चाहता था। मेरा सपना एक ऐसा स्कूल शुरू करना था, जो दोनों पहलुओं का पोषण करेगा।”

सामाजिक सुधार के प्रणेता राजमाता ने अपने पूरे जीवन में ग्वालियर के लोगों के लिए समान समर्पण रखा।

राजनीतिक में भूमिका:

राजमाता विजयाराजे सिंधिया “सादगी, सरलता और संवेदनशीलता की त्रिमूर्ति थीं। भारतीय राजनीति में वे मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री डी.पी. जब मिश्रा की सरकार टॉप की थी और जनसंघ के विधायकों के समर्थन से। गोविंद नारायण सिंह को मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया था, तब से लोगों को राजनीतिक रूप से राजमाता की शक्ति का एहसास होना शुरू हुआ। लोग उन्हें राजमाता के नाम से जानते थे, लेकिन जिस दिन उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस सरकार को पलट दिया और गठबंधन सरकार बनाई, उसी समय लोग कहने लगे कि अब राजमाता विजयाराजे सिंधिया जनसंघ की सदस्यता ले लेंगी।

वही हुआ, और राजमाता जनसंघ में शामिल हो गईं। अटलजी और आडवाणी जी के साथ चर्चा के बाद, उन्होंने लोकमाता से भारतीय जनसंघ के राजमाता की ओर बढ़ना शुरू किया। वह कुशाभाऊ ठाकरे के बहुत शौकीन थे। वह उसे दामाद मानती थी। कुशाभाऊ ठाकरे से पूछे बिना उन्होंने कभी कोई राजनीतिक फैसला नहीं लिया। कुशाभाऊ ठाकरे भी उनका बहुत सम्मान करते थे।

1980 में, जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष चंद्रशेखर ने राजमाता से आग्रह किया कि वे “ रायबरेली से जनता पार्टी की ओर से इंदिरा गांधी से लोकसभा चुनाव लड़ें। राजमाता ने कहा कि पार्टी को फैसला करना चाहिए। राजमाता रायबरेली गईं और कै। इंदिरा गांधी के खिलाफ चुनाव लड़ा। वे पीछे नहीं हटे। वह चुनाव हार गईं। लेकिन उन्होंने बिना किसी विरोध के संगठन के निर्णय का पालन किया। यह संगठन की अखंडता का एक अनूठा उदाहरण है।

केंद्र में जनता पार्टी की सरकार बनी। उस समय तत्कालीन नेताओं को कई सरकारी पद दिए गए थे। लेकिन राजमाता ने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने हमेशा संगठन को महत्व दिया। राजमाता धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद में शामिल हो गईं।

राजमाता वात्सल्य की धनी थीं। वह ममतामयी थीं। अटल जी और आडवाणी 1972 में उनके सामने आए, उन्हें एक बार जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने के लिए दोनों नेताओं ने राजमाता के साथ चर्चा की। राजमाता ने कहा कि मुझे एक दिन का समय चाहिए। राजमाता भी आध्यात्मिक थीं। जब वह दतिया पीतांबरा पीठ गई, तो अपने गुरुजी के साथ चर्चा की और लौट आई, उसने अटलजी और आडवाणी से कहा कि वह एक कार्यकर्ता

के रूप में भारतीय जनसंघ की सेवा करना जारी रखेंगी। पदों के प्रति उनका कभी कोई आकर्षण नहीं था।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने भारतीय राजनीति में एक महिला के रूप में देश में एक मॉडल स्थापित किया। राष्ट्रहित के प्रति उनकी जागरूकता ने उन्हें राजमाता से लोकमाता बना दिया। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक की उनकी यात्रा में उतार-चढ़ाव थे, लेकिन उन्होंने अपने सिद्धांतों और विचारधारा के प्रति समर्पण कभी नहीं छोड़ा।

लोकसभा सदस्य:

राजमाता के जीवन का दूसरा पहलू राजनीति में उनका प्रवेश था जो बहुत नाटकीय रूप से हुआ। 1950 के दशक में ग्वालियर हिंदू महासभा का गढ़ था क्योंकि पार्टी ने महाराज जीवाजी राव सिंधिया के संरक्षण का आनंद लिया था। कांग्रेस पार्टी इस परिदृश्य से नाखुश थी और अफवाहें फैल रही थीं कि यह पार्टी महाराजा के लिए समस्याएं खड़ी करेगी। जीवाजी राव मुंबई में अपने निजी काम में व्यस्त थे, इसलिए राजमाता ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का फैसला किया और उन्हें समझा दिया कि महाराज कांग्रेस-विरोधी नहीं थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका संदेह तभी दूर होगा जब जीवाजी राव कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ेंगे। जब राजमाता ने नेहरू को समझाया कि जीवाजी राव का राजनीति में प्रवेश करने का इरादा नहीं है, तो प्रधानमंत्री ने राजमाता को महाराज के स्थान पर खड़े होने के लिए कहा। अगर प्रधानमंत्री अटल होते, तो राजमाता चुनाव लड़ने के लिए राजी हो जातीं और ग्वालियर से जीत जातीं। लेकिन जीवाजी राव की रक्षा के लिए की गई यह राजनीतिक संधि लंबे समय तक नहीं चली।

1967 के चुनावों से पहले, मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री डी.पी. मिश्रा के साथ मतभेदों के बाद, राजमाता सिंधिया ने कांग्रेस छोड़ दी और जनसंघ की ओर से विधानसभा के लिए चुनाव लड़े और एक स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर लोकसभा (उस समय लोकसभा और विधानसभा अलग नहीं थे)। वे दोनों चुनाव जीते और औपचारिक रूप से जनसंघ में शामिल होने के बाद विधान सभा के सदस्य बनने का फैसला किया।

सत्ता परिवर्तन:

मध्य प्रदेश की विधान सभा में रानी के प्रवेश ने राजनीति में एक नया मोड़ ला दिया। राज्य कांग्रेस इकाई को मिश्रा की अवरोधक कार्यशैली से बहुत निराशा हुई। इस हतोत्साहन ने एक बड़ा रूप ले लिया जब 36 सदस्यों ने अपना समर्थन वापस ले लिया और मिश्रा की सरकार को गिरा दिया। पार्टी के शीर्ष पदाधिकारियों ने मिश्रा पर पद छोड़ने का दबाव डाला और इस तरह मध्य प्रदेश पहली बार 'कांग्रेस-मुक्त' हो गया। यह एक स्थापित तथ्य है कि मिश्रा के पदमुक्ति के पीछे राजमाता ही थी।

संयुक्त विधानमंडल नाम की एक संधि सरकार का गठन किया गया था, जिसकी अध्यक्षता खुद राजमाता ने की थी और मिश्रा के पूर्व साथी गोविंद नारायण सिंह मुख्यमंत्री बने थे। दुख की बात है कि बदले की भावना पर आधारित यह संधि सरकार ज्यादा दिन नहीं चली। 20 महीनों के बाद, सिंह ने इस संधि को तोड़ दिया और फिर से कांग्रेस में शामिल हो गए। हालांकि, जनसंघ राज्य में एक प्रभावशाली पार्टी बन गई और राजमाता इसके सबसे लोकप्रिय नेताओं में से एक थी। उनके नेतृत्व में जनसंघ ने 1971 के लोकसभा चुनावों में इंदिरा गांधी की लहर का सामना किया और ग्वालियर क्षेत्र में तीन सीटें जीतीं - राजमाता भिंड, उनके बेटे माधवराव सिंधिया गुना से, हालांकि बाद में उन्होंने पार्टी छोड़ दी और ग्वालियर से अटल बिहारी वाजपेयी।

विजया राजे बनाम प्रियदर्शिनी:

कुछ इतिहासकारों का मत है कि इंदिरा गांधी ने शाही परिवारों के शाही बैग के प्रावधान को हटा दिया, ताकि वह विजया राजे सिंधिया जैसी शाही हस्तियों का मनोबल गिरा सकें लेकिन इससे ग्वालियर की महारानी नहीं रुकीं, जिनकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। इंदिरा गांधी सरकार के साथ उनका अगला संघर्ष तब था जब वह आपातकाल के दौरान तिहाड़ जेल में कैद थे। उसे जयपुर की रानी गायत्री देवी ने भी कैद कर लिया था। दोनों रईसों ने गांधी के निरंकुश तरीकों का विरोध किया।

प्रधानमंत्री का सिंधिया के लिए एक गुप्त उद्देश्य था। जिस तरह इंदिरा के पिता ने जीवाजी को संकट से बचाने के नाम पर विजया राजे को कांग्रेस से जोड़ा था, उसी तरह इंदिरा ने विजया राजे के बेटे माधवराव सिंधिया को अपनी मां की भलाई का वादा करके जनसंघ छोड़ने के लिए मजबूर किया। अपनी माँ की तरह, माधवराव ने कांग्रेस के समर्थन में गुना के निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव लड़ा और जनता पार्टी की लहर के बावजूद जीत गए। 1980 में, वे औपचारिक रूप से कांग्रेस के सदस्य बने और तीसरी बार गुना से चुनाव जीते।

1984 में कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में, उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी के खिलाफ ग्वालियर से लड़ाई लड़ी। राजमाता ने अनिच्छा से अपने बेटे की मदद की, हालांकि उन्होंने केवल वाजपेयी जी के लिए प्रचार किया। अभियान के दौरान, उन्होंने कहा था कि उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि सिंधिया परिवार की गरिमा बनी रहे, हालांकि उन्होंने वाजपेयी के लिए कहा, लेकिन जनता समझ गई कि यह माधवराव को जीतने के लिए कहा गया था। क्षेत्र में राजमाता की लोकप्रियता समान रही।

जटिल पारिवारिक रिश्ते:

जनता के प्रति उनके समर्पण और राजनीति ने उन्हें अपने बच्चों से मिलने के लिए बहुत कम समय दिया, और 1961 में जीवाजी राव की मृत्यु के बाद भी कम। अपनी आत्मकथा में, वह दुःख के साथ कहती हैं कि वह अपनी बेटियों का भी समर्थन नहीं कर सकती थीं। अपनी दो बेटियों की संघर्षपूर्ण शादी। अधिक अपने इकलौते बेटे के साथ अपने मतभेदों के बारे में जाना जाता है। लेकिन उनके सभी बच्चे, वसुंधरा राजे (राजस्थान की मुख्यमंत्री), यशोधरा राजे सिंधिया (मध्य प्रदेश में कैबिनेट मंत्री) और दिवंगत माधवराव भी अपने राजनीतिक जीवन को आकार देने के लिए अपनी माँ को श्रेय देते हैं। वे कहते हैं कि राजमाता ने उन्हें विश्वास दिलाया ताकि वे राजनीतिक सफलता हासिल कर सकें। दिवंगत प्रधानमंत्री वाजपेयी जी उन्हें एक आदर्श राजनीतिक कार्यकर्ता मानते हैं।

अंतिम पहलू:

भाजपा सदस्य के रूप में, उन्होंने 1989 में गुना से चुनाव जीता और 1991, 1996 और 1998 में उस सीट को बरकरार रखा। भाजपा में रहते हुए उन्होंने राम जन्मभूमि आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्वयं को ग्वालियर क्षेत्र में आने वाले कारसेवकों के आतिथ्य का दायित्व सौंपा। 1999 में, उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया, लेकिन मध्य प्रदेश में पार्टी का समर्थन जारी रखा, जिसके कारण आज भाजपा सरकार ने राज्य में एक दशक से अधिक का कार्यकाल पूरा किया है।

निष्कर्ष:

ऐसे कई मौके आए जब पद उनके (विजया राजे सिंधिया) पर आया। लेकिन उसने उसे विनम्रता से ठुकरा दिया। एक बार अटल जी और आडवाणी जी ने उनसे जनसंघ के अध्यक्ष बनने का आग्रह किया था। लेकिन उन्होंने एक कार्यकर्ता के रूप में जनसंघ की सेवा करना स्वीकार किया। राजमाता ने अपना वर्तमान राष्ट्र

के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया था। देश की भावी पीढ़ी के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। राजमाता पद और प्रतिष्ठा के लिए नहीं जीती थीं, न ही उन्होंने राजनीति की थी। लेकिन जब उसने भगवान की पूजा की, तो उसके मंदिर में भारत माता की तस्वीर भी थी। भारत माता की पूजा उनके लिए भी आस्था का विषय थी। भारतीय राजनीति में महिला के रूप में राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने देश में एक आदर्श कायम किया। उनकी राष्ट्रहित के प्रति जागरूकता ने ही उन्हें राजमाता से लोकमाता बनाया। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक उनकी यात्रा में उनेक उतार-चढ़ाव आए, पर उन्होंने अपने सिद्धांत और विचारधारा के प्रति जो समर्पण रहा उसे कभी नहीं छोड़ा ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पहली बार पार्टी अध्यक्ष बनना (हिन्दी) लालकृष्ण आडवाणी। अभिगमन तिथिः 26 सितंबर, 2010।

दो दशक बाद लौटीं राजमाता (हिन्दी) (एच.टी.एम) वेबदुनिया। अभिगमन तिथिः 26 सितंबर, 2010।

महल तय करता है गुना, शिवपुरी का भाग्य (हिन्दी) जागरण। अभिगमन तिथिः 26 सितंबर, 2010

नव भारत टाइम, समाचार पत्र, दिसम्बर 2011

कार्यालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।

श्री मति वसुंधरा राजे सिंधिया, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, 2013

Corresponding Author

Dr. Ashok Arya*

Lecture, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan